'पारदर्शिता' हर समस्या का हल

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब मनुष्य इन सत्यताओं को भली-भाँति समझ जाता है कि - यह संसार परिवर्तनशील है और इसके सभी पदार्थ क्षण भंगुर तथा नाशवान हैं। मनुष्य को पहले-से यह भी ज्ञात नहीं है कि उसके जीवन की अवधि क्या है, तब वह इस संसार और यहां के व्यक्तियों तथा पदार्थों के प्रति अनासक्त भाव वाला हो जाता है। जैसे नाव नदी में रहते हुए भी उसके ऊपर रहती है, वैसे ही उसका मन भी उपराम-सा रहता है। उसमें लोभ और क्षोभ शांत हो जाते हैं। वह दूसरों से छीना-झपटी नहीं करता। सांसारिक वैभवों और इन्द्रियों के विषयों से लतपत नहीं होता, ना ही मित्रों-सम्बंधियों के अनुराग की दलदल में धंसता है। वह हल्का होकर उड़ता-सा रहता है। वह बैल की तरह टब भर कर खाने की बजाय दो रोटी खाकर ईश्वरीय स्मृति का आनंद लेता है। गरीब है तो क्या हुआ, भगवान तो उसका साथी है।

गुण...गुण...की धुन लगा ले

उस विरक्त भाव या उपराम वृत्ति के साथ-साथ जब उसे इस बात में भी दृढ़निश्चय हो जाता है कि मनुष्य का सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों स्वयं उसी के कर्माधीन है, स्वर्ग या नर्क की प्राप्ति उसके अपने दिव्य गुणों या अवगुणों ही के परिणामस्वरूप होती है, तब वह सद्गुणों की धारणा में और आसुरी गुणों के त्याग में पूरा ध्यान देता है। ये दुनिया कर्मों का लेखा-जोखा है और सभी संबंध कर्मों ही के ताने-बाने से जुड़ते या टूटते हैं - ऐसा जानकर आत्मा और परमात्मा तथा साधना और सिद्धि के ज्ञान से युक्त होकर, वह सद्गुणों का विकास करने में ही लगा रहता है क्योंकि सूक्ष्म आत्मा के साथ सूक्ष्म गुण ही जाते हैं, बाकी बैंक बैलेंस तो बैंकों में ही धरे रह जाते हैं और पुत्र-पौत्र, यार-दोस्त भी शव की अग्नि में अपनी-अपनी लकड़ी डालकर या सामग्री होम करके अपनी-अपनी राह लेते हैं। धुँआ तो आकाश में बिखर जाता है और राख को नदी में प्रवाहित करके, सब रो-धो कर अपने-अपने धंधें में लग जाते हैं। जिस देह को संबंधी जन चूमते और गले लगाते थे या जिससे हाथ मिलाते थे, अब छू जाने पर भी नहाकर शुद्ध होना ज़रूरी समझते हैं। अत: समझदार व्यक्ति यह सब तमाशा देखकर मन को समझाता है कि हे मन तू सद्गुण धारण कर। अरे मन, यह काम कल पर न छोड़। क्या पता कल कोई दुर्घटना घट जाए, व्याधि आ जाए, क्षमता या सामर्थ्य ही न रहे। इसलिये - हे मन, प्रभु से प्रीति लगा ले, आत्मिक ज्योति जगा दे और दिव्य गुणों का आसन - सिंहासन बनाकर उस पर स्थित हो समाधि लगा ले। तू लफड़ों को छोड़ और अब अपनी दिशा को मोड़। ''गुण-गुण....'' की धुन लगा ले।

सद्गुण भी अनेक हैं और उनकी श्रेणियां भी अनेक हैं। कई सद्गुण ऐसे हैं जो मनुष्य की कार्यक्षमता और कार्य-दक्षता को बढ़ाते हैं और अधिक उत्पादन और समृद्धि के निमित्त बनते हैं। उद्यम या मेहनत, कार्य में लगन, उमंग-उत्साह, उत्तरदायित्व इत्यादि इस श्रेणी के गुण हैं। कई गुण ऐसे भी है जो मनुष्य को तनाव-मुक्त और शांत तथा शीतल बनाते हैं। तृष्णाओं का त्याग, संतुष्टता, स्नेह, सहयोग भावना, सहनशील, सकारात्मक चिंतन इस श्रेणी के गुण हैं। अन्य ऐसे भी कई गुण हैं जो प्रशासन या व्यवस्था के कार्य में निपुण बनाते हैं। योजनाबद्ध कार्यविधि, निष्पक्ष भाव, न्यायशीलता, निर्णय इत्यादि ऐसे गुण हैं। कुछेक गुण ऐसे भी हैं जो मनुष्य के व्यवहार को श्रेष्ठ बनाते हैं। मधुरता, गंभीरता और रमणीकता, सेवा-भाव इस प्रकार के गुण हैं। कुछ गुण उसके व्यवसायिक जीवन को स्वच्छ और योग्यताओं से भरपूर बनाते हैं। ये सभी गुण एक-दूसरे के परिपूरक, पृष्ठपोषक और सहायक होते हैं। इन सभी गुणों का पारस्परिक तालमेल है। इन सभी को धारण करने से ही जीवन महान् बनता है और परिपूर्णता की ओर जाता है।

मानसिक निर्मलता

यों तो सभी गुणों का अपना-अपना महत्व है।

परंतु इन सभी में मानसिक निर्मलता नामक जो सद्गुण है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिये कहा गया है कि ''सच्चे दिल पर साहेब राज़ी होते हैं।'' यह भी कहा गया है कि ''मन साफ हो तो मुराद हासिल होती है।'' इस एक गुण में अन्य अनेकानेक गुण समाए हुए हैं। आज संसार में इस एक के न होने से ही अनेक दुर्गुण पनप रहे हैं। इस बात को थोड़ा स्पष्ट करना यहां प्रासंगिक होगा। मानसिक निर्मलता का एक उच्च स्तर ऐसा होता है जिसे हम पारदर्शिता भी कहते हैं। पारदर्शिता हरेक को अपनी ओर आकर्षित तो करती ही है परंतु साथ-साथ उससे अनेकानेक लाभ हैं। उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि किसी समाज में हरेक व्यक्ति का मन पारदर्शी है। उस समाज में हरेक व्यक्ति को यह स्पष्ट आभास होगा कि जिससे वह बात कर रहा है वह क्या सोच रहा है अथवा उसकी वृत्ति क्या है? दूसरे व्यक्ति को भी यह आभास होगा कि हम दोनों क्या सोच रहे हैं, क्या कहना चाहते हैं, उसके पीछे हमारा भाव क्या है? यह स्पष्ट बोध होगा कि हमारा परस्परिक वास्तविक स्नेह कितना है? मनुष्यों का स्नेह पशु-पक्षियों को पहुंचेगा और पशु-पक्षियों का मनुष्यों को पहुंचेगा, मानो कि भाषा के बिना ही आदान-प्रदान हो रहा है। भाषा तो एक अतिरिक्त माध्यम होगा। निर्मल मन एक-दूसरे के निकट होते हैं और घनिष्टता अनुभव करते हैं। इस गुण की अधिक गहराई में जाने पर आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि ऐसे समाज में बेईमानी, धोखेबाजी, मक्कारी, फरेब, झूठ, बनावटी-पन, दिखावा, दंभ, किसी को हानि पहुंचाने का संकल्प, बात छिपाने की कोशिश इत्यादि नहीं होंगे। जब हरेक व्यक्ति यह जानता, मानता और अनुभव करता होगा कि दूसरे भी उसके मन के बारे में स्पष्ट रीति जानते हैं कि हमारे मन में क्या चल रहा है, तब वह उनसे छिपायेगा कैसे या उनसे धोखा कैसे कर सकेगा, झूठ कैसे बोल सकेगा? आज संसार में जो बेईमानी, रिश्वतखोरी, ईर्ष्या-द्वेष, हिंसा की भावना, वैर-विरोध, छीना-झपटी या स्वार्थ है वे सब तो ऐसे समाज में होंगे ही नहीं क्योंकि हरेक का मन इतना साफ होगा कि वह दूसरे की मानसिक गतिविधियों को ऐसे ही स्पष्ट रीति देख सकेगा जैसे पारदर्शी शीशे के पीछे की हरेक चीज़ स्पष्ट दिखाई देती है। वास्तव में हरेक को पारदर्शिता की स्थिति ही इस कारण प्राप्त होगी कि उनमें ये सब बुराइयां होंगी ही नहीं। आज मनुष्य अपने व्यवहार में बाहर से कुछ और है और भीतर से कुछ और। उसका दोहरा चरित्र है। उसने कई मुखौटे लगा रखे हैं। वह दूसरों को बेवकूफ बनाता-फिरता है। चरित्र-भ्रष्ट होने पर भी उसने अपने व्यक्तित्व का दूसरों पर अच्छा प्रभाव डाल रखा है। वह दंभी है, स्वयं को भी धोखा देता है और दूसरों की आँखों में भी धूल डालता है। जिस समाज में हरेक व्यक्ति का मन निर्मल होगा, उसमें ये सब एक-हज़ार-एक पाप हो ही नहीं सकेंगे, उनका अस्तित्व ही नहीं होगा। वहां के लोगों के शब्द-कोष में ये शब्द ही नहीं होंगे और उनकी भाषा या भावाभिव्यक्ति में क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि नाम मात्र, लेश मात्र या तनिक भी नहीं होंगे। अत: ये सभी प्रकार के अपराध, दंड, पाखंड, चंड-प्रचंड इत्यादि भी अनुपस्थित होंगे। न कोई किसी का विरोधी होगा, न प्रतिरोधी। न सत्ता दल होगा न विरोधी दल। न पुलिस होगी, न जेल क्योंकि होगा सभी में तालमेल।

कठुआ-जम्मू कश्मीर। केन्द्रीय मंत्री डॉ. जीतेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वीना।

फतेहपुर-8महादेवन टोला। सांसद विक्रम सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मुन्नी तथा ब्र.कु. प्रियंका।

दिल्ली-मजलिस पार्क। नवनिर्वाचित निगम पार्षद नवीन त्यागी को सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. करुणा भाई,माउण्ट आबू, दिल्ली बराड़ बिरादरी अध्यक्ष रामकुमार बराड़, सुरेन्द्र कोहली,सदस्य, दिल्ली विपणण बोर्ड भारत सरकार तथा अन्य क्षेत्रीय विशिष्ट लोग।

आरा-बिहार। 'वर्तमान उज्जवल बनाओ-भविष्य इसी पर आधारित है' विषयक कार्यक्रम में अपना अनुभव सुनाते हुए ब्र.कु. पंचम। साथ हैं बी.एड. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सीताराम प्रसाद, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. सुरभी तथा अन्य।

भवानीगढ़-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में विधायक विजेन्द्र सिंगला, पी.ए. संदीप भाई, ब्र.कु. राजिन्दर कौर, ब्र.कु. ज्योति तथा शहर के अन्य भाई बहनें।

कण्डेला-उ.प्र.। 'किसान सशक्तिकरण' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं गांव के प्रधान विलियम जी, शीशपाल प्रधान, ब्र.कु. बबिता तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।